

खबर संक्षेप

मतदाताओं से दावे एवं आपत्तियों की प्रक्रिया शुरू

झज्जर। जिला निर्वाचन अधिकारी एवं डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि जिन पात्र नागरिकों का नाम प्रारूप मतदाता सूची में शामिल नहीं हुआ है, उन्हें चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। ऐसे मतदाता 30 अगस्त 2026 तक अपने संबंधित बीएलओ के माध्यम से फॉर्म-6 भरकर ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन आवेदन कर मतदाता सूची में अपना नाम शामिल करावा सकते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी मतदाता को यह नहीं समझना चाहिए कि उसका वोट स्थायी रूप से कट गया है। पहले प्रारूप मतदाता सूची में अपना नाम जांचें और यदि नाम नहीं है तो निर्धारित प्रक्रिया के तहत आवेदन करें। उन्होंने बताया कि 1 जुलाई 2026 को अर्हता तिथि मानते हुए एसआईआर अभियान चलाया जा रहा है। जिन नागरिकों की आयु 18 वर्ष पूर्ण हो चुकी है, वे अपना वोट बनवाने के लिए आवेदन कर सकते हैं।

खेत में प्रवासी महिला श्रमिक को सांप ने डसा

झज्जर। बरसात के मौसम में आजकल सर्पदंश के मामले बढ़ रहे हैं। रविवार सुबह खेतों में काम करते समय एक प्रवासी महिला श्रमिक सर्पदंश का शिकार हो गई। जब उसकी तबीयत बिगड़ी तो परिजन उसे अस्पताल लेकर पहुंचे। अस्पताल में उपचाराधीन महिला उषा ने बताया कि वह मूल रूप से यूपी के जिले शाहजहांपुर की रहने वाली है तथा यहां खेड़ी जट्ट में खेत मजदूर के रूप से कार्य करती है। सुबह जब वह खेत से खरपतवार उखाड़ने में लगी थी उसी दौरान एक पीले रंग के सांप ने उसे डस लिया।

बाढ़सा एम्स की पार्किंग से वाहन चोरी

बहादुरगढ़। गांव कबलाना निवासी श्रीओम ने पुलिस शिकायत में कहा कि वह दिल्ली में होमगार्ड है। उसने डाबोदा गांव में पावर हाउस के पास अपनी बाइक खड़ी की और लक्षशुंका के लिए चला गया। कुछ ही मिनट में वापस लौटा तो बाइक नहीं मिली। कोई अज्ञात शख्स चुरा ले गया। इस शिकायत पर सदर थाने में केस दर्ज हुआ है। वहीं अलीगढ़ यूपी के निवासी सुमित का कहना है कि उसकी मामी बाढ़सा एम्स में भर्ती है। गत 26 जुलाई को वह मामी की स्कूटी लेकर एम्स गया था। स्कूटी अस्पताल परिसर में स्थित पार्किंग में खड़ी कर दी। वहां से कोई चुरा ले गया।

बाइक चोरी के आरोपी को जेल मेजा

बहादुरगढ़। एमआईई चौकी पुलिस ने बाइक चोरी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। चोरीशुदा बाइक भी बरामद ली है। आरोपी की पहचान धर्म विहार निवासी यश के रूप में हुई है। अदालत में पेश कर उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है। दरअसल, छोट्टापम नगर के निवासी शिवम ने 29 जुलाई को शिकायत दी थी कि उसकी दुकान के सामने से बाइक चोरी हो गई। इस शिकायत पर सिटी थाने में केस दर्ज हुआ। मामले में अब आरोपी को गिरफ्तार कर बाइक बरामद कर ली गई है।

रोहद में सड़क पर मिला लहलुहान शव

बहादुरगढ़। रोहद में बाढ़पास कट के निकट एक व्यक्ति का शव मिला। सड़क दुर्घटना में मौत की आशंका जताई जा रही है। पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ केस दर्ज किया है। घटना रविवार अलसुबह की है। रोहद में बाढ़पास कट के निकट सड़क पर लहलुहान अवस्था में शव मिला था। शव की शिनाख्त हिसार के कापडो निवासी करीब 52 वर्षीय रामनिवास के रूप में हुई है। पांच-छह दिन पहले वह अस्थायी घर से निकला हुआ था। हादसे के बारे में अभी कोई जानकारी नहीं है।

दावा-बहादुरगढ़ विस की जून 2026 में प्रकाशित हुई मतदाता सूची में भी दो वोट

हरिभूमि न्यूज >>> बहादुरगढ़

चेयरपर्सन सरोज राठी के दो वोट होने का दावा करते हुए इनेलो नेता कपूर राठी ने कहा कि उन्होंने नगर परिषद का चुनाव लड़ते समय झूठा शपथ पत्र देकर बहादुरगढ़ के लोगों व चुनाव आयोग को गुमराह किया था। शपथ पत्र में उन्होंने अपना एक



बहादुरगढ़। चेयरपर्सन सरोज राठी के दो वोटों का खुलासा करते कपूर राठी।

वोट बताया था, जबकि हकीकत में उस समय भी उनके दो वोट थे। हैरत की बात है कि दोनों वोट में उम्र भी

अलग-अलग है। पैक्स डायरेक्टर कपूर सिंह राठी ने बताया कि सरोज राठी ने जब

नगर परिषद बहादुरगढ़ का चुनाव लड़ा तो उस समय भी वार्ड नंबर-16 में वोट क्रमांक 154 व वोट क्रमांक 3531 पर उनके दो वोट थे। दोनों में मतदाता पहचान पत्र नंबर एफएनएन-1307553 व एफएनएन-1307537 हैं। उस समय भी दोनों मतदाता पहचान पत्रों में उनकी उम्र में अंतर 4 साल का दिखाई दे रहा है। राठी ने कहा कि

बहादुरगढ़ विधानसभा की जून 2026 में प्रकाशित हुई मतदाता सूची में भी ये दोनों वोट मौजूद थे। उस मतदाता सूची में भी बूथ नंबर 142 के वोट क्रमांक नंबर 196 में एपिक नंबर एफएनएन 1307553 के तहत मकान नंबर 664 में नगर परिषद

अध्यक्ष सरोज पत्नी रमेश का वोट है। वहीं बूथ नंबर 161 के तहत वोट क्रमांक 540 के तहत सरोज पत्नी रमेश की मकान संख्या 110/1 के तहत दिखाया गया है। जिसका एपिक नंबर एफएनएन 1307537 है। उनके दो अलग-अलग वोटर कार्ड नंबर और दोनों एपिक नंबर में उम्र का अंतर भी 4 साल है। यह

गंभीर जांच का विषय है। कपूर राठी ने आरोप लगाया कि बहादुरगढ़ नगर परिषद चुनाव में सुनियोजित तरीके से एक व्यक्ति के वोट दो, तीन व चार-चार बार बनाए गए थे, जबकि नगर परिषद चुनाव में भाजपा प्रत्याशी सरोज राठी ने केवल 2563 वोटों से जीत दर्ज की

शहर में दर्जनों जगह भारी-भरकम ब्रेकरों पर चालक हो रहे चोटिल

मनमाने ब्रेकर बने मुसीबत

नियमों के विपरित ऊंचे-ऊंचे स्पीड ब्रेकर बनाने से हो रहे हादसे

हरिभूमि न्यूज >>> झज्जर

शहर की सड़कों और गलियों में नियमों को ताक पर रखकर बनाए जा रहे ऊंचे और भारी-भरकम स्पीड ब्रेकर अब लोगों के लिए परेशानी का कारण बन गए हैं। सड़क और गली निर्माण के दौरान कई स्थानों पर स्थानीय लोगों द्वारा अपनी सुविधा के अनुसार मनमाने तरीके से बड़े-बड़े स्पीड ब्रेकर बनवा दिए गए हैं। इनकी ऊंचाई और चौड़ाई निर्धारित मानकों से कहीं अधिक होने के कारण दुपहिया वाहन चालकों को सबसे ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। आए दिन वाहन चालक इन ब्रेकरों पर असंतुलित होकर गिर रहे हैं। शहर के मुख्य मार्गों के अलावा कॉलोनियों और मोहल्लों की गलियों में भी ऐसे स्पीड ब्रेकर बनाए गए हैं, जिन पर वाहन धीरे चलाने के बावजूद निकला हिस्सा ब्रेकर से टकरा जाता है, जबकि बाइक और स्कूटी चालकों का संतुलन बिगड़ने का खतरा बना रहता है।



झज्जर। शहर के डाकखाना परिसर के पीछे गली में बना ऊंचा ब्रेकर।



झज्जर। शहर के देशवाल कॉम्पलेक्स में बना ऊंचा ब्रेकर।

वाहनों की गरम्मत पर बढ़ रहा खर्च

मानव ने कहा कि ऊंचे स्पीड ब्रेकरों के कारण वाहन का निचला हिस्सा ब्रेकर से टकरा जाता है। जिसके कारण पुर्जों को नुकसान पहुंच रहा है। इससे उन्हें बार-बार गरम्मत पर अतिरिक्त खर्च करना पड़ रहा है। रात के समय या बारिश के दौरान ऐसे ब्रेकर और भी अधिक खतरनाक साबित होते हैं। जिसके कारण दुर्घटना होने का अंदेशा बना रहता है।

दुपहिया वाहन चालक हो रहे शिकार

नरेंद्र चंचल ने बताया कि ऊंचे स्पीड ब्रेकर सुरक्षा के बजाय खतरे का कारण बनते जा रहे हैं। यदि समय रहते इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ सकती है। उन्होंने प्रशासन से समस्या के जल्द समाधान और ऊंचे स्पीड ब्रेकर बनाने व बनवाने वाले दोनों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।



बिना स्वीकृति बनाए जा रहे ब्रेकर हैं खतरा

विशेषज्ञों के अनुसार स्पीड ब्रेकर निर्धारित मानकों के अनुरूप ही बनाए जाने चाहिए ताकि वाहन की गति नियंत्रित हो, लेकिन दुर्घटना का खतरा न बढ़े। शहर में कई स्थानों पर बिना किसी स्वीकृति के मनमाने ढंग से स्पीड ब्रेकर बना दिए गए हैं। जिससे पता चलता है कि संबंधित विभागों द्वारा निगरानी और नियमों के पालन पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जा रहा। जबकि परेशानी आमजन और वाहन चालकों को हो रही है।

जल्द ही हटाए जाएं ऊंचे स्पीड ब्रेकर

सागर ने बताया कि शहर के कई स्थानों पर स्पीड ब्रेकर इतने ऊंचे हैं कि दुपहिया वाहन चालकों का संतुलन बिगड़ जाता है। कई बार दुपहिया वाहन चालक चोटिल भी हो चुके हैं। उन्होंने कहा कि इन स्पीड ब्रेकरों को हटकर नियमानुसार स्पीड ब्रेकर बनाए जाएं ताकि वाहन चालकों को परेशानी का सामना न करना पड़े।



एटीएम से निकले कटे-फटे व स्याही लगे नोट, महिला ने पुलिस बुलाई

हरिभूमि न्यूज >>> झज्जर

शहर के पुराना बस स्टैंड रोड स्थित एक बैंक के एटीएम से रविवार को एक महिला को कटे-फटे और स्याही लगे नोट मिलने का मामला सामने आया। बैंक में अवकाश होने के कारण महिला ने डायल 112 पर सूचना देकर पुलिस को मौके पर बुलाया और घटना से अवगत कराया। शहर निवासी महिला ने बताया कि वह घरेलू सामान खरीदने के लिए बाजार आई थी। ऐसे में उसने सुबह 10 बजकर 33 मिनट पर एटीएम से पांच हजार रुपये निकाले। रुपये गिनें पर उसने देखा कि पांच-पांच सौ रुपये के तीन नोट कटे-फटे थे, जबकि दो अन्य नोटों में से एक पर लाल और



झज्जर। एटीएम से निकले नोट।

दूसरे पर नीले रंग की स्याही लगी हुई थी। महिला का कहना है कि एटीएम से निकले खराब नोटों के कारण उसे परेशानी का सामना करना पड़ेगा। रविवार होने के कारण बैंक बंद था, जिससे वह तत्काल नोट बदलवाने में असमर्थ रही।

रेलवे ट्रैक क्रॉस करते समय ट्रेन की चपेट में आने से बुजुर्ग की मौत

हरिभूमि न्यूज >>> बहादुरगढ़

रविवार को रेलवे स्टेशन परिसर के निकट हादसा हो गया। यहां ट्रैक क्रॉस करते वक्त एक बुजुर्ग ट्रेन की चपेट में आ गया, इससे उनकी मौत हो गई। जीआरपी बहादुरगढ़ ने मामले में कार्रवाई शुरू कर दी है। मृतक की पहचान करीब 58 वर्षीय फूल सिंह के रूप में हुई है। जानकारी के मुताबिक, फूल सिंह सूरत नगर के निवासी थे। रविवार को स्टेशन के निकट रेलवे ट्रैक क्रॉस कर रहे थे। इसी दौरान ट्रेन आ गई। चपेट में आने से उनकी मौत हो गई। सूचना पाकर राजकीय रेलवे पुलिस टीम मौके पर पहुंची और आवश्यक कार्रवाई शुरू की।

ट्रेक पर मिला महिला का शव

बहादुरगढ़। बराही फाटक के पास रेलवे ट्रैक पर एक महिला का शव मिला। ट्रेन की चपेट में आने से महिला की मौत हुई है। मृतका की शिनाख्त नहीं हो पाई है। पुलिस ने शव अस्पताल में रखवा दिया है। घटना रविवार सुबह की है। किसी ने ट्रैक पर महिला की मौत की सूचना दी तो पुलिस मौके पर पहुंची। आसपास लोगों से पूछताछ की लेकिन पहचान नहीं हो सकी। मृतका की उम्र करीब 30 वर्ष आंकी जा रही है। जांच अधिकारी उर्मिला के अनुसार, शव को 72 घंटे के लिए अस्पताल में रखवाया गया है। पहचान के बाद परिजनों के बयान होंगे, फिर पोस्टमार्टम कराया जा सकेगा।

जांव विधायक ने किया शहीद ब्रिगेडियर होशियार सिंह स्टेडियम का औचक निरीक्षण

खिलाड़ियों ने विधायक को बताई पेयजल व लाइट की समस्या

विधायक राजेश जून ने संबंधित अधिकारियों को फोन कर तत्काल समस्याएं दूर करने के लिए निर्देश

हरिभूमि न्यूज >>> बहादुरगढ़

शहीद ब्रिगेडियर होशियार सिंह स्टेडियम में लंबे समय से मूलभूत सुविधाओं की कमी को लेकर मिल रही शिकायतों के बाद बहादुरगढ़ के विधायक राजेश जून ने रविवार को स्टेडियम का औचक निरीक्षण किया। उनके साथ वार्ड पार्षद सचिन दलाल भी मौजूद रहे। निरीक्षण के दौरान विधायक ने खिलाड़ियों और स्थानीय नागरिकों से सीधे बातचीत कर

उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना। खिलाड़ियों ने विधायक को बताया कि स्टेडियम में पेयजल की समुचित व्यवस्था नहीं है, कई स्थानों पर स्ट्रीट लाइट खराब होने से शाम के समय अंधेरा छा जाता है। इन कमियों के कारण नियमित अभ्यास में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

शिकायतें सुनने के तुरंत बाद विधायक राजेश जून ने मौके से ही संबंधित अधिकारियों से फोन पर बात कर पेयजल व्यवस्था तत्काल बहाल करने, नई स्ट्रीट लाइटें लगाने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों से कार्य में किसी प्रकार की लापरवाही न बरतने की भी हिदायत दी। विधायक राजेश जून ने कहा कि शहीद ब्रिगेडियर होशियार सिंह स्टेडियम बहादुरगढ़ के खिलाड़ियों की



बहादुरगढ़। खिलाड़ियों से सुविधाओं की जानकारी लेते विधायक राजेश जून।

प्रतिभा को निखारने का प्रमुख केंद्र है। यहां खिलाड़ियों को हर आवश्यक सुविधा उपलब्ध कराना उनकी प्राथमिकता है।

उन्होंने भरोसा दिलाया कि स्टेडियम में किसी भी प्रकार की मूलभूत सुविधा

की कमी नहीं रहने दी जाएगी और सभी समस्याओं का जल्द स्थायी समाधान कराया जाएगा। सीएम नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में प्रदेश की भाजपा सरकार खेलों को बढ़ावा देने के लिए लगातार कार्य कर रही है और खिलाड़ियों को

बेहतर वातावरण उपलब्ध कराना उनकी जिम्मेदारी है। स्टेडियम में आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध होने से खिलाड़ियों को अभ्यास में सहूलियत मिलेगी और वे राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जिले और प्रदेश का नाम रोशन कर सकेंगे।

पीएम के आह्वान पर बनावेंगे नशामुक्त भारत



डॉक्टरों ने रखी ऑक्सीजन वन की नींव



मामला अदालत में विचाराधीन, बयानबाजी करना कोर्ट की अवमानना : सरोज राठी

इस मामले में चुनाव संपन्न होते ही आरोप लगाने वालों की तरफ से अदालत में इलेक्शन पटिशन दायर की थी। यह मामला अदालत में विचाराधीन है। इस मामले में बयानबाजी करना कोर्ट की अवमानना है।

- सरोज राठी, चेयरपर्सन नगर परिषद बहादुरगढ़

थी। आगामी चुनाव की तैयारी करते हुए भाजपा सरकार ने बहादुरगढ़ में एसआईआर के माध्यम से आम नागरिकों के 66 हजार 143 वोट काट दिए, जो कि न्यायसंगत नहीं है। गत नप चुनाव में धोंधली के बावजूद मात्र कुछ वोटों से जीत मिली थी। जबकि कांग्रेस तीसरे

नंबर पर रही थी। इस मौके पर इनेलो शहरी जिलाध्यक्ष रामनिवास सैनी, पूर्व पार्षद शशि कुमार, अजय कादियान, मनोज दलाल, राजेश भारद्वाज, एडवोकेट सौरभ शर्मा, एडवोकेट विपिन, देवेंद्र राठी, सुरेंद्र शर्मा, देवराज गंभीर आदि मौजूद रहे।

सुछक्कास गांव के नजदीक हुई सड़क दुर्घटना

खड़े ट्रक में टकराई कार हवलदार की गई जान

प्रमोशन को मधुबन में चल रही थी ट्रेनिंग, एक दिन की छुट्टी पर घर आए थे कर्मबीर

हरिभूमि न्यूज >>> झज्जर

क्षेत्र के गांव सुछक्कास के नजदीक हुई सड़क दुर्घटना में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई। मृतक की पहचान जिले के गांव ढाणी सु छ क वा स ह रि या ना

पुलिस में कार्यरत हवलदार कर्मबीर पुत्र दुर्गा प्रसाद के तौर पर हुई है। कर्मबीर गुरुग्राम में कार्यरत थे तथा प्रमोशन को लेकर मधुबन में उनकी ट्रेनिंग चल रही थी। वह एक दिन की छुट्टी लेकर घर आए थे। शनिवार रात करीब ग्यारह बजे जब वह अपनी गाड़ी से गांव जा रहे थे तो उनकी कार रास्ते में बाएं किसी इंडीकेटर के सड़क पर खड़े एक

कार की टक्कर से बाइक सवार बिजली कर्मी की मौत

बहादुरगढ़ (हरिभूमि न्यूज)। नाहरा-नाहरी रोड स्थित रेलवे प्लाईओवर पर बीली रात को दर्दनाक हादसा हो गया। यहां कार की चपेट में आने से बिजली कर्मचारी की मौत हो गई। लाइनपार थाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर कार चालक के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है। मृतक की पहचान करीब 40 वर्षीय मनोज के रूप में हुई है। मनोज खरखोबा का रहने वाला था और अंबुजा कंपनी के माध्यम से बिजली निगम बहादुरगढ़ में काम करता था। शनिवार रात करीब 11 बजे वह बाइक पर सवार होकर बहादुरगढ़ के लिए रवाना हुआ। रात करीब 12 बजे यहां लाइनपार से निकलकर नाहरा नाहर रोड स्थित रेलवे प्लाईओवर पर चढ़ा तो एक आई 10 कार के साथ बाइक की टक्कर हुई। हादसा इतना भीषण था कि बाइक के परखच्चे उड़ गए। मनोज को गंभीर चोट आई। आनन फानन में उसे बहादुरगढ़ के नागरिक अस्पताल ले जाया गया, जहां से पीजीआई रोहतक रेफर कर दिया गया। बेहतर इलाज के लिए परिजनों ने एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया, जहां इलाज के दौरान मौत हो गई। सूचना पाकर परिजन अस्पताल की ओर दौड़े तो लाइनपार थाना पुलिस भी मौके पर जांच करने पहुंची। रविवार को परिजनों के बयान के बाद पुलिस ने पोस्टमार्टम की कार्रवाई शुरू कराई। मृतक मनोज के बेटे विनीत ने हादसे के लिए कार चालक को जिम्मेदार ठहराया है। शिकायत पर लाइनपार थाना पुलिस ने गाड़ी चालक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नाहरा-नाहरी रोड स्थित रेलवे प्लाईओवर पर हादसा

अनाजमंडी के पास बाइक सवार दो युवकों ने महिला की चेन तोड़ी

हरिभूमि न्यूज >>> झज्जर

बाइक सवार दो नकाबपोश युवकों द्वारा महिला के गले से चेन तोड़ने की वारदात को अंजाम दिया गया है। पुलिस को दी शिकायत में पीड़ित महिला ने बताया कि शनिवार सुबह करीब दस बजे वह अपने पति के साथ मुंह पर कपड़ा बादली रोड अनाजमंडी के पास एक बांधे हुए थे डिलीवरी कार्यालय से अपना पर्सल आरोपी, केस दर्ज लेना पति जब पार्सल लेने के अंदर गया और वह बाहर खड़ी थी उसी दौरान मुंह पर कपड़ा बांधे हुए दो युवक बाइक पर सवार होकर वहां पहुंचे। उन युवकों में से एक युवक मेरे गले से चेन तोड़ते हुए अपनी साथी युवक की बाइक पर सवार होकर भाग निकला। पुलिस ने शिकायत के आधार पर मामला दर्ज करते हुए नियमानुसार आगामी कार्रवाई शुरू कर दी है।

सावन के लोकगीतों में प्रकृति, प्रेम और परिवार

हरियाणवी लोकगीतों में सावन मास का वर्णन कोई सामान्य ऋतु-वर्णन नहीं है। यह हरियाणवी जनमानस का प्रकृति के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन और एक संपूर्ण दार्शनिक विवेचन है।



लोक साहित्य

आंचल शर्मा

लोक साहित्य किसी भी प्रदेश की माटी की वह जीवंत धड़कन होता है, जिसमें जनमानस के सुख-दुःख, आशा-निराशा और प्रकृति के साथ उनके अटूट रगात्मक संबंध गुँजते हैं। हरियाणवी लोकगीतों की समृद्ध परंपरा में सावन का विशेष दार्शनिक और सांस्कृतिक महत्व है। ग्रीष्म ऋतु की झुलसा देने वाली गर्मी के बाद जब आसमान में काले-कजारे बादल फिर आते हैं और धरती की प्यास बुझती है तो केवल प्रकृति ही नहीं, बल्कि संपूर्ण लोक-जीवन उल्लास से भर उठता है।

सावन के लोकगीतों में प्रकृति का यह अभिनंदन केवल बाह्य सौंदर्य का वर्णन नहीं है, अपितु यह मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक ताने-बाने और लोक-दर्शन का एक गहरा काव्यात्मक विवेचन है। सावन के हरियाणवी लोकगीतों के व्यापक संदर्भों में प्रकृति, मनुष्य और समाज के इस अद्वैत संबंध को विस्तार से समझा जा सकता है। सावन का महिना आते ही हरियाणवी जनजीवन में एक नई



जुर्जा का संचार हो जाता है। जब हरियल बागों में झूल पड़ते हैं तो प्रकृति की हरी-भरी चादर पर लोके-संस्कृति के सतरंगी परिधान अपनी छटा बिखेरते हैं। लोकगीतों में झूलते समय पहने जाने वाले पारंपरिक वस्त्रों का वर्णन बहुत ही भव्य और अतिशयोक्तिपूर्ण सौंदर्य के साथ किया गया है। नायिका के घाघरे का विस्तार और भव्यता सीधे तौर पर सावन के उल्लास की विशालता को दर्शाती है। लोककंठ इस सांस्कृतिक शृंगार का गान कुछ इस प्रकार करता है -

*सात जणो का हे मां मेरी झूलणा जी
पड़्या पिंजोला हरियल बाग में जी
अस्सी गज का हे मां मेरी घाघरा जी
उसमें कली सैं तीन सौ साठ जी*

यहां अस्सी गज का घाघरा और तीन सौ साठ कलियां केवल वस्त्र का माप नहीं हैं, बल्कि ये उस प्रचुरता, समृद्धि और खुशी के प्रतीक हैं जो सावन अपने साथ लेकर आता है। प्रकृति के हरे रंग के बीच इन लोक-परिधानों का घुमना एक ऐसा दृश्य उकेरता है, जहां मनुष्य और प्रकृति एक ही लय में नृत्य करते हुए प्रतीत होते हैं। सावन के ये झूल केवल आनंद का साधन न होकर एक ऐसा सामाजिक मंच हैं जहां हर, रंग और जाति के सभी भेद मिट जाते हैं। उम्रगणों लोकरंग की यह सबसे बड़ी विशेषता है। हिया यहां उत्सवों में एक गहरी सामाजिक समरसता देखने

को मिलती है। बागों में झूलने के लिए हर आयु और हर रूप-रंग की स्त्रियाँ एक साथ एकत्रित होती हैं। प्रकृति किसी भी भेद नहीं करती, उसकी चष्मा गिरे और साँवले, पंढ़र और बीस वर्ष की आयु वालों पर समान रूप से होती है। इसी दार्शनिक भाव को अपनाते हुए हरियाणवी समाज की विभिन्न जातियाँ भी इन झूलों पर एक साथ अपना उल्लास साझा करती हैं। झूलों और बागों का वर्णन एक उत्सव की तरह किया जाता है, जहाँ सामाजिक समता स्पष्ट रूप से मुखरित होती है -

*साम्णन आह माँ मीरी सुण्हा जी
हां जी कोए आई है नवेली तीज
पड़ै ए पंजाली हरियाल बाग में जी*

यह उल्लास सभी वर्गों को एक सूत्र में जोड़ता है -

*एक दस झूले बाटम्ण बाणिये जी
हां जी एक दस रंघड़ और राजपूत
बिच बिच झूल केवर निहालदे जी*

हरियाणवी लोक संस्कृति में सावन का सबसे बड़ा पर्व तीज है। प्रकृति जब अपने पूरे यौवन पर होती है तब तीज का आमगम होता है -

*तीजां का ल्योहार रिठु सै साम्णन की
खड़ी झूल पै मयके छोहर री बाटम्ण की*

मायके का लोहंगी और भतीजे के घर में झूला डालने का जो क्रम लोकगीतों में

दर्शाया गया है, वह पीढ़ियों के विस्तार और मायके से जुड़े स्नेह की दर्शाता है। वर्षा की इन बूंदों का अत्यंत सूक्ष्म और लयबद्ध चित्रण भी मिलता है -
 - **नानी नानी बुँदिया है सावन का मेरा झूलणा**
एक झूला डाला मैंने बाबल के राज में
संग की सहेली है सावन का मेरा झूलणा
 यह बाबल का राज एक प्रकार का राजशाही सुख है जहां बेटियों को असीम स्वतंत्रता प्राप्त होती है। यहां सावन की बूंदें उनके मन की प्रसन्नता के अह्लाद के और भी अधिक बढ़ाती हैं -
 - **नानी नानी बुँदिया मीयां बरसता है जी**
हां जी काहे चारों दिसा पड़ेगी फुवार
हां जी काहे सामण आया सुघड़ सुहावणा
संग की सहेली मां मेरी झूलती जी
 सावन के लोकगीतों में बड़ी घटनाओं के साथ सावन के सूक्ष्म प्राकृतिक परिवर्तनों को भी शब्दों में पिरोया गया है। जब वर्षा शुरू होती है और संधियां भाने लगती हैं तो नायिका की विवशता एक बहुत ही सुंदर बिंब का निर्माण करती है -
 - **सखी सहेली मां मेरी भाजगी जी**
हां जी काहे हम तै तो भाज्या ना जाय
पग की है पायल उलझी दूब में जी
 नायिका के सौंदर्य का वर्णन करते हुए लोककवि प्राकृतिक के सबसे सशक्त प्रतीकों का उपयोग करता है। एक नायिका की मीठी वाणी की तुलना प्राकृतिक के सबसे सुरीले पक्षी से की जाती है -
 - **मीठी बोली तेरी सै जणो कोयल जामन में**
तेरे दामन में लिसकार उठै चमक रिहा घोटा
लर्ज लर्ज के जावे सै योह जामन की डाली
 शारीरिक सौंदर्य को व्यक्त करने के लिए भी प्राकृतिक उपमाएं बहुत ही सहजता से दी गई हैं -
 - **तेरे हुंगे पै लटक के काला ना सा मोटा**
मीठी मोटी ओंखियां के माहां डोरा स्याही का
चंदरमा सा मुखड़ा तेरा जणों नूर का लोटा
 तीज के अवसर पर सरसाल से मायके जाने के लिए किसी का लिवाने आना एक आवश्यक रस्म रही है। पारिवारिक पदानुक्रम और नायिका की इच्छा का यह द्वंद इन पंक्तियों में स्पष्ट दिखाई देता है -
 - **बूझा आया हे मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये ना**
जां बुझ के साथ
 जेटा आया हे मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये ना
 जां जेटे के साथ

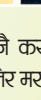
देवर आया ह मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये न जां पाली के साथ
कन्था आया ह मां मेरी लेण नै जी, हां जी कोये इब
जां कन्थे के साथ
यहां ससुर या जेट के साथ जाने में नायिका संकोच
करती है, परंतु पति के आने पर उसकी प्रसन्नता
छलक उठती है। यह हरियाणवी समाज की
परिवारिक संरचना का एक प्रामाणिक दस्तावेज
है। उत्सवों के बीच भी जीवन का कठोर यथार्थ
कभी लुप्त नहीं होता। सावन का उल्लास जहाँ प्रेम
और मिलन के गीत गाता है, वहीं घर की दहलीज
के भीतर चल रही सास-बहू की खींचतान भी यून
लोकगीतों का अभिन्न अंग है। बहू की यह बगावत
लोक-जीवन की उस खी-चेतना का साक्षात्
प्रमाण है जो अपने जन की ओर सम्मान का लिए
अवाज उठाना चाहती थी। प्रकृति के यह
अभिन्नंदन केवल युवतियों के झूलों तक सीमित
नहीं है, बल्कि इसका सीधा संबंध उस कृषक
समाज से भी है जिसके जीवन का आधार ही वर्षा
है। जब गगन में बिजलियाँ चमकती हैं, तो
धरती के उर्वर होने और नई फसल का संकेत है -
रे गगन गरजू झिमावै बिजली
पड़ै बुन्दिया भरै क्यारी
समै बिरखा लागै प्यारी
और जब यह वर्षा विकराल रूप लेती है तो
किसानी जीवन से जुड़े युवा अपने बचाव के लिए
उपलब्ध सभी साधनों का उपयोग करते हैं -
मोटो मोटो बून्दें झुलें पै आई
तो गबरू नै चाहर ताणी, हो मन्ने तेरी सोंह
जद वोह चाहर भीजन लागी
तो गबरू नै छतरी ताणी, हो मन्ने तेरी सोंह
सावन का सबसे कारुणिक और दार्शनिक पहलू
वह है जहाँ यह विह्वल की अंगि को और भड़का
देता है। जब खेत-क्यारियाँ पानी से भर जाते हैं,
तब परदेस गए पति की याद नायिका के हृदय को
चीर देती है। उसे एक राहगीर से मिन्नतें करती है
कि वह उसे अपने साथ ले जाए -
सातुन के डोला घर रहे रे बिटाऊ डोला हमरे गये परदेस
संग चलो ते ले चलूँ मेरी डावर नैनी बली न हमारे साथ
इस विप्रलब्ध शृंगार और यौवन की तड़प का
मार्मिक वर्णन आज भी मिलता है -
सामण का महीना मेघा रिमझिम रिमझिम बरसै

सादन के ये अनमोल लोकगीत और इनका प्रामाणिक संकलन, जैसा कि हरियाणा के लोकरंग जैसी रचनाओं में सहेजा गया है, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के वे मोती हैं, जिनमें प्रकृति के शाश्वत अभिनंदन की गुंज आने वाली सदियों तक सुरक्षित रहेगी।

मैंने समझाऊं तो बी बहरी जौबन तरसे
तीजेजे के दिनां की पड़ी आस बड़ी भारी
ऐसेमें थी न आए मैं पड़ी दुख की मारी
अंततः, उसकी यह वेदना इतनी सघन हो जाती है
कि वह अपने परदेसी पति को एक सख्त संदेश
बिजवाना चाहती है। वह अपनी सखी से कल
भोजवाने पंगवाकर अपने पति को नौकरी छोड़कर
लौट आने का परवाना लिखती है -
हे निकली बिचली गाल जेठानी मार दिया ताना
हे जिनका पति बस परदेस ऐसे जीने से मर जाना
है बड़ी ब्यालो कलम दवाना पति पे गुरूं कटवाना
चाहो लागियो डेढ़ हजार तने अपना नाम कटवाना
हरियाणवी लोकगीतों में सावन मास का वर्णन
कोई सामान्य ऋतु-वर्णन नहीं है। यह हरियाणवी
जनमानस का प्राकृतिक प्रतीक कृतज्ञता ज्ञापन और
संपूर्ण दार्शनिक विवेचन है। रेडियो प्रसारणों
और संस्कृत शिक्षण के माध्यम से लोक-ध्वनियों
छन्दों और भाषा की जो गहराी समझ विकसित होती
है, उसी कसौटी पर पछरने से इन गीतों का
वास्तविक काव्यात्मक और लयबद्ध सौंदर्य उभर
कर सामने आता है। ये सभी प्रसंग मिलकर एक
सुख विशाल प्राकृतिक कैनवास तैयार करते हैं।
जैसे प्र लोक-संस्कृति अपने सुख, दुख, विह,
मिलन, सामाजिक समरसता और पारिवारिक
व्यथार्थ के गहरे रंग उकेरती है। इन गीतों की दार्शनिक
गहराई इसी बात में निहित है कि ये प्रकृति को मनुष्य
से अलग कोई जड़ वस्तु नहीं मानते। सावन के ये
लोकगीत और इनका प्रामाणिक संकलन, जैसा कि
हरियाणा के लोकर्स जैसी रचनाओं में सहेजा गया
है, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के वे मोती हैं,
जिनमें प्राकृतिक के शाश्वत अभिन्नान की गूँज आने
वाली सदियों तक सुरक्षित रहेगी।

गीत डॉ. त्रिलोक चंद फतेहपुरी

फर्ज निभाओ



जननी अर जन्मभूमि का ख्याल आपनै करणा सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरणा सै।

पहला फर्ज मां-बाप ऋण जिस तै छुटकारा पाओ
 गृहस्थ आश्रम म्हें जाकै खुद घर को स्वर्ग बणाओ
 आधि-व्याधि झूझा पीड़ा इनतै कती ना डरणा सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरणा सै॥

दूजा फर्ज गुरु का ऋण जिसने गुणवान बणाया
 भूत भविष्य अर वर्तमान का दर्पण तुम्हें दिखाया
 निज संतान पढ़ा करके गुरु ऋण तै कती उबरणा सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरणा सै॥

फर्ज तीसरा देवों का ऋण जिसने जरूर चुकाओ
 मंदिर मस्जिद तै पहन्या मां बाप की शीश झुकाओ
 सत्य अहिंसा मानवता के भाव मो दिल् म्हें भरणा सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरणा सै॥

आधुनिकता की चकावैध म्हें उलझ नहीं तुम जाना
 जी तोड़ सदा मेहनत करणा मेहनत तै मंजिल पाना
 मां-बाप गुरु के वचन नै याद सदा हीं रखणा सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरणा सै॥

जननी और जन्मभूमि तै सदा हीं प्रीत लगाणा,
 संयम निष्ठा अनुशासन तै सारे फर्ज निमाणा,
 त्रिलोक सीख ले कर्म कमाणा जै भव तै पार उतरणा सै।
 फर्ज की खातिर जीणा सै फर्ज की खातिर मरणा सै॥

haribhoomisahitya@gmail.com पर
आप अपनी रचनाएं भेज सकते हैं।

पारंपरिक व्यंजन **तीज-रक्षाबंधन पर्व पर खास तौर से बनने वाली 'देसी मैगी' की निर्माण प्रक्रिया में ही अपनापन समायोजित हुआ है**

सेवईयां: वह मीठी सौगात, जो हर घर की चादों में बसती थी

जनजीवन

रवि यादव

एक जमाना था जब हर घर में राखी वाले दिन और तीज वाले दिन देसी सेवईयां बनती थीं और सब चाव से खाते थे। गांव की वह मीठी सौगात, जो हर घर की चादों में बसती थी, तब आज के जैसा समय नहीं था। करीब तीस वर्ष पहले तक उत्तर भारत के अनेक गांवों में एक ऐसा पारंपरिक व्यंजन बनाया जाता था, जिसका नाम हमने ही बचपन की अलगिनत यादें ताजा हो जाती हैं। सेई कहें या सेवईयां, आज की पीढ़ी शायद इससे परिचित न हो, लेकिन उस समय यह बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी की पसंद हुआ करती थी। यदि आज के संदर्भ में इसकी तुलना करेंगी तो तो इसे 'देसी मैगी' कहा जा सकता है।

फर्क बस इतना था कि मैगी नमकीन होती है, जबकि सेई मीठी बनती थी और उसमें घर का अपनापन, मेहनत और परिवार का स्नेह घुला होता था। हालांकि नमकीन सेवईयां भी बना ली जाती थीं। उस समय आजकल वाली मिठाइयों का चलन शुरू-दूर तक नहीं था। घर की माताएं घर में लोहे की देसी मशीन से सेवईयां बनाती थीं। इस मशीन को खाट के शेरु में कस दिया जाता था और यंत्र हुआ आटा लोई बनकर इसमें डाल दिया जाता था। कोई एक इस मशीन के हैंडल को घुमाता और जैसे-जैसे हैंडल घुमता, दूसरी ओर से आटे की पतली-पतली लंबी लड़ियां निकलतीं, जो बिस्कुल

आज की मैगी या सेवई जैसी दिखाई देती थीं। सेई का स्वाद केवल उसकी मिठास में नहीं था, बल्कि उसे बनाने की पूरी प्रक्रिया में था। घर की महिलाएं मशीन चलातीं, बच्चे बाहर निकलती सेवईयां को संभालते, कोई उन्हें सुखाने के लिए फैलाता, तो कोई हंसी-मजाक करता। यह केवल खाना बनाना नहीं, बल्कि परिवार के साथ बिताया गया एक सुखद समय होता था। उस दौर में न मोबाइल थे, न टीवी

का इतना आकर्षण। परिवार के लोग साथ बैठकर काम करते थे और बातचीत में ही समय कब बीत जाता, पता ही नहीं चलता था। एक खाट पर कोई कपड़ा या लुगड़ी बिछा दी जाती और उस पर कीक या किसी अन्य पेड़ की सूखी टहनियां रख दी जाती थीं। मशीन से निकली सेवईयों को इसी टहनियों या छड़ी पर फैला दिया जाता था। धूप में दोपहर तक सेवईयां सूख जातीं और फिर इन्हें देसी चूल्हे पर देगची या पतली में चढ़ा दिया जाता था। कुछ ही देर में पूरे घर में ऐसी मीठी सुगंध फैल जाती कि बच्चे बार-बार रसोई में झांकने लगते—'अम्मा, सेई तैयार हो गई क्या?' थोड़ी देर में सेवईयां तैयार हो जाती थीं और फिर घी बूरा के साथ खायी जाता था। एक बात और याद कीजिए कि जब किसी घर में यह सेवईयां बनाने की मशीन नहीं होती थी तो घर की औरतें गुंथे हुए आटे का छोटा छोटा हिस्सा लेकर हाथ से जवे बना लेती थीं।

हालांकि इनका आकार छोटा होता था, मगर इनका भी पकने पर अपना ही स्वाद होता था। आज जब दो मिनेट में बनने वाली मैगी हर दुकान पर उपलब्ध है, तब सुविधा तो बढ़ गई है, लेकिन उस सामूहिक आनंद की कमी भी महसूस होती है। मशीन का हैंडल घुमाते हुए थक जाना, बच्चों का उत्साह से पास खड़े रहना, धूप में सूखती सेवईयों की खुशबू और शाम को दूध में बनी मीठी सेई का इंतजार ये सब यादें आज भी मन को वापक कर देती हैं। समय के साथ जीवनशैली बदल गई। पारंपरिक रसोई के अनेक उपकरण कबाड़ों के हवाले हो गए और उनकी जगह आधुनिक मशीनों ने ले ली। सेई बनाने वाली वह छोटी-सी मशीन भी अब शायद ही किसी घर में दिखाई देती है। नई पीढ़ी ने उसका नाम भी मुश्किल से सुना होगा, लेकिन जिन लोगों ने बचपन में इसका स्वाद चखा है, उनके लिए सेई केवल एक व्यंजन नहीं, बल्कि अपने गांव, अपने परिवार और अपने बचपन की अमूल्य स्मृति है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम ऐसे पारंपरिक व्यंजनों और उनसे जुड़ी परंपराओं को केवल याद ही न करें, बल्कि अगली

यदि कभी किसी पुराने घर के कोने में वह मशीन मिल जाए, तो उसे कबाड़ समझकर फेंकने के बजाय एक बार फिर से साफ कीजिए, आटा गुंथिए, खाट के पाए में उसे कसिए और हैंडल घुमाइए। यकीन मानिए, मशीन से केवल सेई ही नहीं निकलेगी, बल्कि बचपन की वे अनमोल यादें भी फिर से जीवंत हो उठेंगी, जिनकी मिठास किसी भी आधुनिक व्यंजन से कहीं अधिक है।

पीढ़ी तक भी पहुंचाएं। यदि कभी किसी पुराने घर के कोने में वह मशीन मिल जाए, तो उसे कबाड़ समझकर फेंकने के बजाय एक बार फिर से साफ कीजिए, आटा गुंथिए, खाट के पाए में उसे कसिए और हैंडल घुमाइए। यकीन मानिए, मशीन से केवल सेई ही नहीं निकलेगी, बल्कि बचपन की वे अनमोल यादें भी फिर से जीवंत हो उठेंगी, जिनकी मिठास किसी भी आधुनिक व्यंजन से कहीं अधिक है। असल में हम देखा-देखी के शिकार हो गए और खुद को मॉडर्न कहने लगे हैं।

हरियाणवी नृत्य अपनी कला, ऊर्जा और सौंदर्य में अद्भुत : रोहित बच्ची



कलाकार

डॉ. तबस्सुम जहां

हरियाणवी लोकनृत्य और अभिनय की परंपरा को अपनी कला, संवेदना और समर्पण से सँ पहचान देने वाले युवा कलाकार रोहित बच्छी आज हरियाणवी सिनेमा का एक सशक्त नाम बन चुके हैं। हरियाणवी फिल्म 'दादा लख्मी' में रोहित ने डांसर (नाचर) की भूमिका निभाई। इसके अलावा '12वीं आला याार', 'बूढ़ा', 'बूढ़ा' और 'सांगी' जैसी फिल्मों में उन्हें मुख्य भूमिका निभाने का अवसर मिला। उन्होंने मोमाकू में एक छोटा-सा डांस क्रिडार भी किया। वहीं अस्सस, नोम और सुमित्रा जैसी कई लघु फिल्मों में भी अभिनय किया।

रोहित बच्छी ने गीतों का निर्देशन भी किया है तथा 'वनवास' और 'जर, जोरु, जमीन' जैसी फिल्मों में सहायक निर्देशक के रूप में भी कार्य किया है। उनकी आने वाली फिल्मों में 'यारी में गद्दारी' शामिल है, जिसमें वे नकारात्मक भूमिका निभा रहे हैं। 'दंड' में वे मुख्य नायक की भूमिका में दिखाई देंगे तथा 'गड चक्कर' में भी एक अलग किरदार में नजर आएंगे। सोनीपत जिले के गोहाना में जन्मे रोहित को बचपन से ही नृत्य का गहरा शौक था। बारहवीं तक की शिक्षा गांव के सरकारी विद्यालय से प्राप्त करने के



बाद उन्होंने महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर तथा हाल ही में अभिनय विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। उनकी बड़ी बहन ने शिक्षा और नृत्य, दोनों क्षेत्रों में उच्च प्रेरित करने और आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रोहित के लिए नृत्य भी अभिनय का ही एक रूप है। इसमें वे बिना कुछ बोले अपने हाव-भाव, भावनाओं और अभिव्यक्तियों के माध्यम से बहुत कुछ कह देते हैं। उनके अनुसारा उन्हें सबसे अधिक सार्थक अभिनय ही पसंद है। शुरुआत में उनके लिए अभिनय और नृत्य के बीच

संतुलन बनाना थोड़ा कठिन था उसी संतुलन को बेहतर बनाने और अभिनय को गहराई से समझने के लिए उन्होंने अभिनय कक्षा की औपचारिक शिक्षा प्राप्त की। दादा लख्मी फिल्म में काम करने के विषय में वे बताते हैं कि यह उनका सौभाग्य रहा कि उनके कॉलेज का एक डांस वीडियो वायरल होने की वजह से उन्हें इस फिल्म का हिस्सा बनने का अवसर मिला। उन्होंने पहले से कोई अभ्यास नहीं किया था। स्टेट पर ही कोरियोग्राफी तैयार हुई और वहीं उसे सीखा भी। इसका पूरा श्रेय उन्हें व लीला सैनी और यशपाल यादव प्राप्त हो रहा है। उन्होंने उस पर विश्वास किया, प्रोत्साहित किया और आगे बढ़ने का हाँसला दिया। दादा लख्मी फिल्म को वे हरिणारायण सिनेमा का युग-परिवर्तन मानते हैं। उनके अनुसार आज हरिणारायण का लगभग हर अच्छा गावक फिल्म निर्माण की ओर आकर्षित हो रहा है और इसकी सबसे बड़ी वजह दादा लख्मी हैं उन्होंने कहा है। उनका मानना है कि दादा लख्मी ने अभिनय नचार के किरदार को पूरी शिष्टता से जिया। शायद उसी अभिनय की देखकर सांगी के निर्माताओं ने उन्हें मुख्य किरदार 'अमन' की भूमिका के लिए चुना। जहाँ तक अभिनय की बात है, उनके अनुसार अभिनय उन्हें इतना प्रिय है कि वे हर किरदार में सहजता से ढल

नगार का किरदार उन्होंने केवल पर्दे पर नहीं निभाया, बल्कि उसे वास्तविक जीवन में भी महसूस किया और जिया है। इसलिए इस भूमिका के लिए उन्हें किसी विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं पड़ी। चुनौतियां स्वीकार करना हर कलाकार को अच्छा लगता है।

जाते हैं। रोहित ने दादा लख्मी और सांगी, दोनों में ही नचार का महत्वपूर्ण किरदार निभाया है। उनके अनुसार नचार का किरदार उन्होंने केवल पद पर नहीं निभाया, बल्कि उसमें वास्तविक जीवन में भी महसूस किया और जिजा है। इसलिए इस भूमिका के लिए उन्हें किसी विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं पड़ी। उनके अनुसार चुनौतियाँ स्वीकार करना हर कलाकार को अच्छा लगता है। स्वयं उनके शब्दों में, 'मैंने उस किरदार के लिए एक महिला का वेश धारण किया, तो ऐसा लगा जैसे मैंने एक साथ सौ जिंदगियाँ जी ली हों।'

इस दुनिया में एक स्त्री होना ही अपने आप में एक बहुत बड़ी चुनौती है। आज की परिस्थितियाँ तबड़ा हरियाणवी रंगमंच और सिमरना की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए रोहित मानते हैं कि एक कलाकार के रूप में आज भी परिस्थितियाँ पूरी तरह संतोषजनक नहीं हैं। हालाँकि पहले की तुलना में स्थिति कुछ बेहतर हुई है, लेकिन अभी बहुत काम करना बाकी है। इसे और बेहतर बनाने की जिम्मेदारी हम सभी कलाकारों की है। उनका मानना है कि अंदेटी प्लेटफॉर्म आने के बाद दर्शकों की देखी की आदतों में बड़ा बदलाव आया है। आज अधिकांश लोग घर बैठे ही मनोरंजन चाहते हैं, वह भी निःशुल्क। लेकिन उनके लिए संतोषमाघ में बैचरफ़ फिल्म देखने का अनुभव बिल्कुल अलग है और कहीं अधिक प्रभावशाली होता है। हम अपनी लोक परंपराओं, भाषा और नृत्य पर यत्न करना चाहिए। दुर्भाग्य से हम देसी होने में संकोच महसूस करते हैं, इसलिए हरियाणवी लोकनृत्य को वह सम्मान नहीं मिल पाता, जिसका वह अधिकारी है। आज बच्चों की रूचि पश्चिमी संस्कृति की ओर अधिक है। फिर भी हरियाणवी नृत्य अपनी कला, ऊर्जा और सौंदर्य में अद्भुत है। वस आवश्यकता है कि हम अपनी जड़ों से फिर से जुड़ें।

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में प्रधानमंत्री के राष्ट्र के नाम संबोधन का लाइव प्रसारण देखा

पीएम के आह्वान पर बनाएंगे नशामुक्त भारत

मोदी के वक्तव्य तथा प्रदर्शित नाटकों से प्रेरणा लेते हुए नशा मुक्ति अभियान को सफल बनाने तथा सभी लोगों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत करवाने का संकल्प लिया

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

वैश्य आर्य कन्या महाविद्यालय में नशामुक्त भारत अभियान के अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के राष्ट्र के नाम संबोधन का लाइव प्रसारण देखा गया। मोदी के वक्तव्य तथा प्रदर्शित नाटकों से प्रेरणा लेते हुए नशा मुक्ति अभियान को सफल बनाने तथा सभी लोगों को नशे के दुष्प्रभावों से अवगत करवाने का संकल्प लिया।



बहादुरगढ़। पीएम के आह्वान पर नशामुक्त भारत बनाने की सपरिवार शपथ लेती छात्राएं।

फोटो: हरिभूमि

महाविद्यालय के सभी विभागाध्यक्षों, प्राध्यापकों एवं छात्राओं ने अपने-अपने घरों से वचुंअल माध्यम से कार्यक्रम में

सहभागिता की। सभी ने प्रधानमंत्री के प्रेरणादायी संदेश को सुना, नशामुक्ति का संकल्प लिया तथा नशे के विरुद्ध

जनजागरूकता फैलाने का प्रण किया। पीएम नरेंद्र मोदी ने युवाओं से नशे से दूर रहने, स्वस्थ जीवनशैली अपनाने तथा

नशे से दूर रहने का आह्वान

प्राचार्या डॉ. राजवंती शर्मा ने छात्राओं से आग्रह किया कि वे स्वयं नशे से दूर रहें। अपने परिवार, मित्रों और आसपास के लोगों को भी नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करें। शिक्षित युवा ही नशामुक्त, स्वस्थ, जागरूक और सशक्त भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नशामुक्ति सेल की प्रमारी डॉ. शालू शर्मा ने बताया कि महाविद्यालय मॉड्य में भी नशे के विरुद्ध जनजागरूकता के लिए विभिन्न ऑनलाइन एवं ऑफलाइन कार्यक्रमों का आयोजन करता रहेगा।

समाज में नशामुक्ति का संदेश घर-घर तक पहुंचाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि नशा व्यक्ति, परिवार, समाज तथा देश के लिए घातक है। विकसित भारत के निर्माण के लिए युवाओं का नशे से दूर रहना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने प्रत्येक नागरिक से नशामुक्त भारत के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाने की अपील की।



झज्जर। नशामुक्ति संबंधी शपथ लेते हुए छात्राएं व महाविद्यालय स्टाफ सदस्य।

नशे के दुष्प्रभाव युवाओं को बताएंगे

■ महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में नशामुक्ति अभियान के तहत पीएम का वचुंअल संबोधन सुना

झज्जर। महाराजा अग्रसेन महिला महाविद्यालय में रविवार को नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वचुंअल संबोधन छात्राओं व स्टाफ सदस्यों ने सुना। इस कार्यक्रम के अंतर्गत एक नाटक का प्रदर्शन भी किया गया। एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर अनु बरवर ने बताया कि कार्यक्रम में एनएसएस तथा महाविद्यालय की अन्य छात्राओं ने भागीदारी की। उन्होंने नशा मुक्ति अभियान के अंतर्गत शपथ ग्रहण करते हुए कहा कि वे स्वयं नशे से दूर रहकर अन्य लोगों को भी नशे के प्रति जागरूक करेंगे।



झज्जर। नशे से दूर रहने और समाज को जागरूक करने की शपथ लेते हुए युवा। फोटो: हरिभूमि

युवाओं ने ली नशे से दूर रहने की शपथ

झज्जर। आईटीआई गुढ़ा परिसर में रविवार को नशा मुक्त युवा फॉर विकसित भारत संकल्प अभियान के तहत जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित युवाओं ने सामूहिक रूप से नशा मुक्ति की शपथ लेते हुए स्वयं नशे से दूर रहने तथा अपने परिवार, मित्रों और समाज को भी नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लाइव वचुंअल संबोधन सुना।

प्रधानमंत्री ने युवाओं से स्वस्थ, अनुशासित और नशामुक्त जीवनशैली अपनाने का आह्वान करते हुए

कहा कि देश की युवा शक्ति ही विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। जिला युवा अधिकारी बृजेश कोशिक ने कहा कि नशा केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करता, बल्कि परिवार और समाज पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिए युवाओं को नशे से दूर रखते हुए उन्हें खेल, योग, सांस्कृतिक गतिविधियों, शिक्षा और रचनात्मक कार्यों से जोड़ना समय की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन द्वारा युवाओं के लिए जागरूकता एवं सकारात्मक गतिविधियों को निरंतर बढ़ावा दिया जा रहा है।

विद्यार्थियों को नशा, साइबर अपराध व ट्रैफिक नियमों के प्रति किया जागरूक

झज्जर। जन-जागरूकता अभियान के तहत नशा मुक्ति टीम और ट्रैफिक यूनिट के संयुक्त तत्वावधान में निजी शिक्षण संस्थान में जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान पुलिस टीम ने विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और समाज पर गंभीर नकारात्मक प्रभाव डालता है। उन्होंने युवाओं से नशे से दूर रहने तथा दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने का आह्वान किया। इसके साथ ही विद्यार्थियों को डायल-112 आपातकालीन सेवा की उपयोगिता, साइबर अपराधों से बचाव के उपाय तथा ऑनलाइन ठगी से सुरक्षित रहने के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि किसी भी प्रकार की आपात स्थिति या अपराध को सूचना तुरंत डायल-112 पर दी जा सकती है। ट्रैफिक यूनिट टीम ने सड़क सुरक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए हेलमेट और सीट बेल्ट का अनिवार्य रूप से उपयोग करने, वाहन चलाने समय मोबाइल का प्रयोग न करने, नाबालिगों द्वारा वाहन न चलाने तथा सभी यातायात नियमों का पालन करने की अपील की।



झज्जर। विद्यार्थियों को नशे के दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करते हुए पुलिस टीम।



बहादुरगढ़। कार्यक्रम में युवाओं को शपथ दिलाते इस्कॉन पदाधिकारी।

फोटो: हरिभूमि

नशामुक्त जीवन के लिए युवाओं ने लिया संकल्प

बहादुरगढ़। नशामुक्त युवा फॉर विकसित भारत अभियान के तहत इस्कॉन यूथ फोरम की ओर से नशामुक्ति संकल्प कार्यक्रम आयोजित किया गया। विद्यार्थियों, नौकरीपेशा युवाओं, व्यवसायियों और शिक्षकों सहित बड़ी संख्या में युवाओं ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने आजीवन किसी भी प्रकार के नशीले पदार्थ का सेवन नहीं करने और दूसरों को भी नशामुक्त जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित करने की शपथ ली। फोरम के डायरेक्टर नामकीर्ति दास ने कहा कि इस्कॉन करीब 60 वर्षों से श्रील एसी भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद

की शिक्षाओं के माध्यम से नशामुक्त और सार्वजनिक जीवनशैली को बढ़ावा दे रहा है। आध्यात्मिक मूल्यों, अनुशासन और उचित मार्गदर्शन से युवा नशे जैसी बुरी आदतों से दूर रहकर शिक्षा, नौकरी व व्यवसाय समेत जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। कार्यक्रम को सफल बनाने में रघुनाथ जीवन दास, हेमांग गौरांग दास, अजय कृष्ण दास, दीनबंधु दास और हरी कृपा दास का विशेष सहयोग रहा। इस दौरान युवाओं ने नशामुक्त समाज और विकसित भारत के निर्माण में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया।

नहीं लगा बुजुर्ग के 50 घंटे बाद बाकरा से दूबलधन मार्ग हत्यारोपी का सुराग पर पुल के पास अटका मिला शव

■ मातन में बुजुर्ग महिला अनकौर की हत्या की गुन्थी अनुसुलझी पहली बनी

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

मातन में बुजुर्ग महिला अनकौर की हत्या की गुन्थी अनुसुलझी पहली बन गई है। दस दिन बीत जाने के बाद भी मामले में स्थिति जस की तस है। हत्यारोपियों की पहचान और हत्या के कारणों का पता नहीं चल सका है। मामले में पुलिस की टीमें लगातार भागदौड़ कर रही हैं।

गत 23 जुलाई को 77 वर्षीय अनकौर का बंद मकान में शव मिला था। अनकौर गांव में अकेली रहती

थी। दो दिन फोन पर संपर्क नहीं हुआ तो नाती और नातिन यहां गांव में आए। बाहर से मुख्य दरवाजे पर ताला लगा था। दुर्गंध आने और शंका होने पर ताले तोड़े गए तो अंदर कमरे में अनकौर का शव मिला था। गले में चुन्नी बंधी हुई थी। चुन्नी से गला घोटकर हत्या की गई थी। परिजनों ने किसी पर शक नहीं जताया था। लिहाजा अज्ञात पर हत्या का केस दर्ज हुआ। बुजुर्ग अनकौर की किस से क्या दुश्मनी थी, किस मकसद से उसे मौत के घाट उतारा आदि सवाल बने हुए हैं। चौकी प्रभारी राजेंद्र सिंह का कहना है कि मामले में गंभीरता से जांच चल रही है। जल्द से जल्द मामले को सुलझाने का प्रयास चल रहा है।

हरिभूमि न्यूज़ ►► बेरी

क्षेत्र के गांव गोच्छी से गुजर रही जवाहर लाल नेहरू कैनाल नहर में पैर फिसलने से गिरे किसान पंकज का शव पचास घंटे बाद बाकरा से दूबलधन मार्ग पर पुल के पास अटका हुआ मिला। पुलिस द्वारा शव को पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल भिजवाया गया है। सोमवार सुबह शव का पोस्टमार्टम करवाया जाएगा।

जानकारी के अनुसार गांव गोच्छी निवासी 25 वर्षीय किसान पंकज शुक्रवार को अपनी मां के साथ खेत में गया था। खेत में काम करने के बाद हाथ-पैर धोने के लिए नहर के किनारे गया था। इस दौरान



बेरी। जेएलएन नहर पर चला सर्व अभियान व (इनसेट में) मृतक पंकज का फाइल फोटो।

अचानक उसका पैर फिसल गया और वह तेज बहाव में बह गया। यह देखकर उसकी मां ने मदद के लिए

लोगों को बुलाया। कुछ लोग मौके पर भी आए, लेकिन वह नहीं दिखा। इसके बाद सूचना

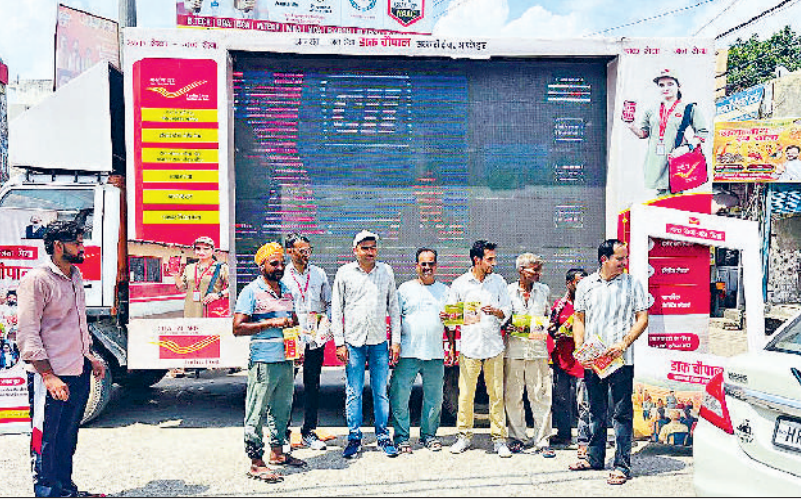
पुलिस व एसडीआरएफ को दी गई। एसडीआरएफ की टीम आवश्यक उपकरणों के साथ मौके पर पहुंची। गोताखोरों ने नहर में कई स्थानों पर तलाश की और जलधारा के बहाव को देखते हुए काफी दूर तक सर्च अभियान चलाया। ग्रामीण भी मौके पर प्रशासन का सहयोग करते रहे, लेकिन कोई सुराग नहीं लगा। रविवार को बाकरा से दूबलधन मार्ग पर पुल के पास अटका हुआ शव मिला। बेरी थाना प्रभारी विनोद कुमार ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए नागरिक अस्पताल झज्जर में रखवा दिया गया है। सोमवार सुबह शव का पोस्टमार्टम करवाया जाएगा।



झज्जर। पोस्टमार्टम के लिए कागजी कार्रवाई करते हुए पुलिसकर्मी। फोटो: हरिभूमि

पोस्टमार्टम कराने के बाद परिजनों को सौंपा शव

झज्जर। गांव दादरी तोए के नजदीक टैकर की टक्कर से हुई कर्मचारी की मौत मामले में रविवार को पुलिस द्वारा मृतक दुजाना निवासी अर्जुन पुत्र जयभगवान के शव का पोस्टमार्टम करवाया गया। पुलिस द्वारा पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया है। शनिवार को दोपहर बाद करीब साढ़े तीन बजे जब अर्जुन अपने गांव के साथी कर्मचारी राजेश के साथ बाइक पर अपने गांव लौट रहा था तो दादरी तोए गांव के नजदीक उनकी कार को एक पाली के टैकर ने टक्कर मार दी थी। इस घटना में जहां अर्जुन की मौत हो गई वहीं राजेश भी गंभीर रूप से घायल हो गया था। पोस्टमार्टम के दौरान अस्पताल परिसर में उपस्थित परिजनों ने बताया कि अर्जुन का कंपनी में पहला दिन था



झज्जर। ओबेडकर चौक पर लोगों को जागरूक करते हुए मोबाइल प्रचार वैन टीम। फोटो: हरिभूमि

डाक विभाग की मोबाइल प्रचार वैन ने लोगों को किया जागरूक

हरिभूमि न्यूज़ ►► झज्जर

डाक विभाग द्वारा रविवार को शहर में मोबाइल प्रचार वैन

के माध्यम से विशेष जनजागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान का मुख्य उद्देश्य आमजन को डाक विभाग की बचत, बीमा एवं अन्य आधुनिक डाक सेवाओं की जानकारी प्रदान कर, उनका लाभ लेने के लिए प्रेरित करना रहा। मोबाइल प्रचार वैन ने शहर के प्रमुख बाजारों एवं सार्वजनिक स्थलों का भ्रमण कर लोगों को सुकन्या समृद्धि योजना, डाक जीवन बीमा, ग्रामीण डाक जीवन बीमा, इंडिया पोस्ट पेमेंट्स

बैंक, डाकघर बचत खाता, आवर्ती जमा, साविधि जमा, मासिक आय योजना, वरिष्ठ नागरिक बचत योजना, राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र, किसान विकास पत्र, स्पीड पोस्ट, रजिस्ट्री तथा अन्य डाक सेवाओं की विस्तृत जानकारी दी। स्थानीय अंबेडकर चौक पर आयोजित कार्यक्रम के दौरान नागरिकों की जिज्ञासाओं का समाधान करते हुए उन्हें डाक विभाग की सुरक्षित एवं विश्वसनीय सेवाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया। जनजागरूकता अभियान में एसपीएम सतीश कुमार, डाक सहायक अश्वनी तथा ग्रामीण डाक सेवक संजय कुमार ने भाग लिया।

हरिभूमि न्यूज़ ►► बहादुरगढ़

ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन की ओर से रविवार को बामडोली गांव में जनसंपर्क अभियान चलाया गया। इस दौरान नुककड़ सभा में महिलाओं ने बह-चढ़कर भाग लिया। संगठन ने बिजली बिल, बीज बिल और लैंड पूलिंग पॉलिसी सहित सरकार की विभिन्न नीतियों का भी विरोध किया।

संगठन के सचिव जयकरण मांडोटी ने कहा कि सरकारी स्कूलों में शिक्षकों की कमी और निजी शिक्षण संस्थानों में बढ़ती फीस के कारण आम परिवारों के लिए बच्चों को पढ़ाना मुश्किल गया है। शिक्षा के बाद रोजगार की समस्या भी बनी हुई है। बढ़ती महंगाई और रसोई गैस, डीजल-पेट्रोल के दामों में वृद्धि से



सीमित दायरे में था, लेकिन अब इसे कलेक्टर रेट से जोड़ने के कारण लोगों पर कई गुना

■ आम जनता, मध्यम वर्ग, किसानों और छोटे कारोबारियों पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालने वाला निर्णय: जून

ऑल इंडिया किसान खेत मजदूर संगठन ने बामडोली में जनसंपर्क अभियान चलाया

नुककड़ सभा में किसान-मजदूरों की समस्याओं पर मंथन

परिवारों का खर्च बढ़ गया है। ब्लॉक कमटी सदस्य राजबीर सिंह छिल्लर ने अमेरिका के साथ प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते को लेकर भी संगठन ने किसानों और दुग्ध उत्पादकों के हित प्रभावित होने की आशंका जताई। जिला कमटी सदस्य रामकिशन ने मनरेगा, श्रम कानूनों और रोजगार से जुड़े मुद्दे उठाए। उन्होंने कहा कि किसान, मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए संगठन की ओर से आंदोलन को मजबूत किया जाएगा। जनसंपर्क अभियान में मास्टर कप्तान सिंह, प्रकाश ठोलेदार, धर्मबीर सिंह, विरेंद्र सिंह और नरेंद्र पाराशर सहित अन्य लोग मौजूद रहे। जबकि नुककड़ सभा में छोटी देवी, अनिता देवी, सुशीला, सोमलता, कृष्णा, कमलेश और चांदनी सहित कई महिलाओं ने भाग लिया।



बहादुरगढ़। महिलाओं को संगठन की नीतियों से अवगत करवाते जयकरण।

फोटो: हरिभूमि

पर्यावरण प्रेमियों के साथ मिलकर डॉक्टर्स ने रखी ऑक्सीजन वन की नींव

मेगा पौधरोपण अभियान में 300 देशी और छायादार पौधे लगाए



बहादुरगढ़। ऑक्सीजन वन में किया जा रहा पौधरोपण और कार्यक्रम में भाग लेने वाले डॉक्टर्स और पर्यावरण प्रेमी।



फोटो: हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

पर्यावरण संरक्षण को जन आंदोलन का रूप देने के उद्देश्य से रविवार को सेक्टर-12 में मियावाकी वन के निकट बहादुरगढ़ डॉक्टर्स ऑक्सीजन वन की नींव रखी गई। क्वीन एंड ग्रीन ट्रस्ट सहित 25 संस्थाओं के सहयोग से आयोजित सामुदायिक मेगा पौधरोपण अभियान में 5 से 6 फीट के करीब 300 देशी व छायादार पौधे लगाए

गए। वनमित्र शीलम के नेतृत्व में आयोजित अभियान में आईएमए और नीमा बहादुरगढ़ के चिकित्सकों के साथ कई संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भागीदारी की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संत निरंकारी सत्संग भवन बहादुरगढ़ के दयाल सिंह ने पौधरोपण कर अभियान का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि प्रकृति की सेवा ही मानव सेवा है। ब्रह्माकुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय से आई

प्रकृति की सेवा ही मानव सेवा : दयाल

ब्रह्माकुमारियों ने पर्यावरण संरक्षण को आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बताते हुए वृक्षों को धरती का वास्तविक आभूषण बताया। वहीं, आईएमए के चिकित्सकों ने कहा कि बढ़ता वायु प्रदूषण श्वास संबंधी रोगों, हृदय रोगों सहित कई गंभीर बीमारियों का कारण बन रहा है।

स्वस्थ समाज के लिए बेहतर चिकित्सा सुविधाओं के साथ स्वच्छ और हरित वातावरण भी जरूरी है। नीमा प्रतिनिधियों ने भी नागरिकों से अधिक से अधिक पौधे लगाने और उनके संरक्षण का आह्वान किया। आयोजकों के अनुसार, झज्जर जिले में प्रति व्यक्ति पेड़ों की संख्या राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी कम है। इस अंतर को कम करने के लिए केवल पौधारोपण ही नहीं, बल्कि लगाए गए पौधों के संरक्षण पर भी विशेष ध्यान देना होगा।

शिविर में 80 लोगों ने कराई स्वास्थ्य जांच

बहादुरगढ़। सार्वक सेवा समिति की ओर से नया गांव स्थित सैनी चौपाल में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर लगाया गया। शिविर में 80 लोगों ने स्वास्थ्य जांच करवाई। बीपी, शुगर और ईसीजी की जांच के साथ मरीजों को निःशुल्क दवाइयां भी वितरित की। शिविर में हृदय रोग, हड्डी रोग, महिला रोग और सामान्य रोग विशेषज्ञों ने मरीजों की जांच कर उन्हें स्वास्थ्य संबंधी परामर्श दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ महा सिंह सैनी, प्रधान रामनिवास सैनी और सरपंच रोहतस सैनी ने रिबन काटकर किया। समिति ने सरपंच रोहतस सैनी का सम्मान किया।

शिव पुराण मात्र एक ग्रंथ नहीं, बल्कि मुक्ति का मार्ग : कौशिक

झज्जर। सावन मास के पावन अवसर पर बाबा कांशीगिरी महाराज मंदिर में तृतीय श्री शिव महापुराण कथा का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने भगवान शिव और माता-पार्वती कि विशेष पूजा-अर्चना करते हुए परिचार की सुख-समृद्धि कि कामना की। कथा के दौरान श्री शिव रुद्राष्टकम स्तुति से पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। कथा वाचक पंडित पवन कौशिक ने शिव पुराण के महत्व को विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि सावन मास में भगवान शिव स्वयं धरती पर निवास करते हैं। शिव पुराण मात्र एक ग्रंथ नहीं, बल्कि मुक्ति का मार्ग है। शिव ही सृष्टि के रचयिता और पालनकर्ता हैं। जो भी भक्त श्रद्धा से शिव पुराण कथा का श्रवण करता है, उसे भगवान शिव कि विशेष कृपा प्राप्त होती है। इस दौरान संगीता वर्मा, पूनम छाबड़ा, सुष्मा गोसाईं, इंदू भूगड़ा ने भोले डमरू बजा एक बार हमारे हरि कीर्तन में, शीश भोले के जटा विराजे, भोले गंगा बहा दो एक बार हमारे हरि कीर्तन में, शशी खत्री ने डम डम डमरू बजाए मेरा मोला, थोड़ा ध्यान लगा मोला दौड़ दौड़ आएंगे, भजन प्रस्तुत कर श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया। इस मौके पर मंदिर समिति प्रधान सुधांशु हंस, देवराज भूगड़ा, वेद बहल पाशु, रमेश लखेरा, रुद्र कंशिध, पूनम चूध, भारत भूषण नंदा, प्रिंस सेठी, सेवक अप्पित, नारायणी सरदाना, संख्या आर्य, इंदू शर्मा, प्रीति गाबा, रोजी नारंग, आशा गोवर, सुष्टि रंजन, तुशू खत्री, आशू भावना काठपालिया, सन्तोष हंस सहित काफी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

सभी पदक विजेताओं को डीएसपी जैसे उच्च पदों पर नियुक्ति दे सरकार: हुड्डा

हरिभूमि न्यूज ►► झज्जर

रविवार सायं पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा पूर्व वीसी स्वर्गीय विवेक चंद शर्मा के निधन पर शोक व्यक्त करने उनके आवास पर पहुंचे। उन्होंने परिवार वालों से मुलाकात कर उन्हें ढाढस बंधाया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। बाद में मीडिया से रूबरू होते हुए उन्होंने कॉमनवेल्थ खेलों में पदक जीतने वाले तमाम खिलाड़ियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि हमेशा की तरह हरियाणा के खिलाड़ियों ने देश का नाम रोशन किया है। उन्हें इस बात का गर्व है कि कांग्रेस सरकार के दौरान जो खेल नीति लागू की गई, उससे नतीजे बरसों बाद भी देखने को मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने कांग्रेस की बनाई खेल नीति में फेरबदल करके खिलाड़ियों को उनके इनाम, सम्मान और पदों से वंचित किया है। उन्होंने कहा कि कॉमनवेल्थ खेलों में जीतने वाले तमाम खिलाड़ियों को तुरंत डीएसपी जैसे उच्च पदों पर नियुक्ति मिलनी चाहिए। पूरी दुनिया में देश का नाम

रविवार सायं पूर्व मुख्यमंत्री और नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा पूर्व वीसी स्वर्गीय विवेक चंद शर्मा के निधन पर शोक व्यक्त करने उनके आवास पर पहुंचे। उन्होंने परिवार वालों से मुलाकात कर उन्हें ढाढस बंधाया और दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। बाद में मीडिया से रूबरू होते हुए उन्होंने कॉमनवेल्थ खेलों में पदक जीतने वाले तमाम खिलाड़ियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि हमेशा की तरह हरियाणा के खिलाड़ियों ने देश का नाम रोशन किया है। उन्हें इस बात का गर्व है कि कांग्रेस सरकार के दौरान जो खेल नीति लागू की गई, उससे नतीजे बरसों बाद भी देखने को मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने कांग्रेस की बनाई खेल नीति में फेरबदल करके खिलाड़ियों को उनके इनाम, सम्मान और पदों से वंचित किया है। उन्होंने कहा कि कॉमनवेल्थ खेलों में जीतने वाले तमाम खिलाड़ियों को तुरंत डीएसपी जैसे उच्च पदों पर नियुक्ति मिलनी चाहिए। पूरी दुनिया में देश का नाम

70 लोगों ने करवाई न्यूरो संबंधी जांच

बहादुरगढ़। शहर के ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल में रविवार को निःशुल्क न्यूरो स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। अस्पताल के निदेशक डॉ. मनीष शर्मा ने शिविर का शुभारंभ किया। शिविर में करीब 70 लोगों ने अपनी जांच करवाई। जांच के साथ ही उचित परामर्श भी दिया गया। शिविर में न्यूरो रोग विशेषज्ञ डॉ. पीयूष तोमर ने प्रत्येक व्यक्ति की जांच के साथ ही उनकी स्वास्थ्य स्थिति के अनुरूप उपचार एवं आवश्यक परामर्श प्रदान किया। तोमर ने बताया कि लगातार सिरदर्द, चक्कर आना, हाथ-पैरों में सुन्नपन या कमजोरी, मिर्गी, लकवे के शुरुआती लक्षण, याददाश्त कमजोर होना, हाथों का कांपना, नर्वों से संबंधित दर्द, चलने में असंतुलन तथा बोलने में कठिनाई जैसी समस्याओं को हलकें में नहीं लेना चाहिए। समय पर जांच और उपचार से गंभीर न्यूरोलॉजिकल बीमारियों की पहचान कर उनका प्रभावी इलाज संभव है। इस दौरान मरीजों एवं उनके परिजनों को न्यूरो संबंधी बीमारियों से बचाव और समय पर चिकित्सकीय परामर्श लेने के महत्व के बारे बताया। साथ ही स्वस्थ जीवनशैली अपनाने और नियमित स्वास्थ्य जांच कराने के लिए भी प्रेरित किया। डा. मनीष शर्मा ने कहा कि लोगों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से अस्पताल समय-समय पर ऐसे निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित करता रहेगा।

धार्मिक अनुष्ठान ही नहीं, मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का माध्यम है यज्ञ : शक्तकृत्

झज्जर। आर्य समाज मंदिर में मासिक यज्ञ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें बहमनगरी इंद्रजीत यज्ञ बह्मा रहे जबकि सुमित्रा देवी यज्ञमान रही। इस दौरान उपस्थित श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए आचार्य शक्तकृत् वाचस्पति ने कहा कि यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने का माध्यम है। उन्होंने कहा कि वेदों का संदेश सत्य, सदाचार, सेवा और परोपकार का है तथा प्रत्येक व्यक्ति की अपने जीवन में इन आदर्शों को अपनाना चाहिए। उन्होंने नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, कन्या शिक्षा, सामाजिक समरसता तथा मानव सेवा जैसे विषयों पर भी प्रकाश डाला गया। इस मौके पर आर्य समाज के प्रधान लाला प्रकाशवीर, महाशय रतिराम, रमेश सैनी, दीपक सैनी, डॉक्टर जेके सरदाना, राजीव राठी, ओपी पुनिया, भूप सिंह, अनुज, प्रमिला देशवाल सहित काफी संख्या में आर्यजन उपस्थित रहे।

65 युवाओं ने किया रक्तदान

हरिभूमि न्यूज ►► बेरी

पुरानी गौशाला बेरी में रविवार को निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें नगर पालिका के चेयरमैन बिल्लू पहलवान, भी भोमेश्वरी देवी मंदिर के मुख्य पुजारी कुलदीप वशिष्ठ, बंजारा महासभा हरियाणा के प्रधान नरेश कुमार, विश्व हिन्दू परिषद की ओर से जिलाध्यक्ष राकेश भारद्वाज, धर्म यात्रा महासंघ प्रांत प्रमुख पीताम्बर, धर्म प्रसार प्रमुख राजेश शर्मा के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए शिविर की शुरुआत की। अतिथियों ने रक्तदाताओं को बैज

लगाकर उनका उत्साहवर्धन किया। गोशाला प्रधान जयभगवान व सचिव नरेश कादियान ने बताया कि इंडेथ विजन फाउंडेशन व सेवा ट्रस्ट यूके इंडिया के सहयोग से आयोजित इस शिविर में सर गंगाराम अस्पताल नई दिल्ली के पूर्व गैस्ट्रो एवं कैंसर विशेषज्ञ डॉक्टर नितिन कौशिक व ब्रह्मशक्ति संजीवनी अस्पताल की टीम ने सेवाएं दी। शिविर में कुल 65 युवाओं ने रक्तदान किया जबकि 25 लोगों ने निःशुल्क स्वास्थ्य जांच का लाभ उठाया। इस मौके पर विकास कौशिक, मास्टर राजेश अहलावत, जसवंत सैनी, कृष्ण, बिल्लू फौजी सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को खबर मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य खबर दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-

बहादुरगढ़ :- सुरजमल वाली गली, गणपति टैवल्स के ऊपर, नजदीक टैवली स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन :- 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है

मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।

तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश

आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन **हरिभूमि** के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 × 8 से.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/-
10 × 8 से.मी		रु. 3000/-

+5% GST Extra

नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर :- हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन :- 8295876400
बहादुरगढ़ :- सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति टैवल्स के ऊपर, 8295852900

पूर्व पार्षद जसबीर सैनी ने दिखाई हरी झंडी चलायमान औषधालय को किया रवाना

हरिभूमि न्यूज ►► बहादुरगढ़

कांवड़ यात्रा के दौरान शिवभक्त कांवड़ियों की सेवा के संकल्प के साथ नर सेवा नारायण सेवा संस्थान का निशुल्क चलायमान औषधालय हरिद्वार के लिए रवाना किया गया। हरिद्वार के रुड़की में लगने वाले इस निशुल्क औषधालय को पूर्व पार्षद जसबीर सैनी ने बतौर मुख्य अतिथि हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।



बहादुरगढ़। चलायमान औषधालय को झंडी दिखाकर रवाना करते जसबीर सैनी।

स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया। भाजपा नेता जसबीर सैनी ने कहा कि कांवड़ यात्रा के दौरान शिवभक्तों की निशुल्क चिकित्सा सेवा करना अत्यंत पुण्य और मानवता की सच्ची सेवा है। उन्होंने

नर सेवा नारायण सेवा संस्थान द्वारा वर्षों से धार्मिक स्थलों पर लगाए जा रहे निशुल्क चिकित्सा शिविरों की मुक्तकंठ से सराहना की। वैद्य देवेंद्र रोहिल्ला ने बताया कि 2 अगस्त से 9 अगस्त तक हरिद्वार के रुड़की में

सर्वसम्मति से चुने गए धर्मशाला पदाधिकारी, सीलक राम बने प्रधान



बहादुरगढ़। शहर के लाइनपार स्थित सूर्य कवि पंडित लक्ष्मीचंद धर्मशाला समिति की आम बैठक में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का चयन किया गया। रविवार को चुनाव अधिकारी राजेंद्र शर्मा की देखरेख में समिति के सदस्यों ने सर्वसम्मति से सीलक राम (बिल्लू पंडित) को प्रधान, सुमेरु वशिष्ठ को उपप्रधान, हरीश वशिष्ठ को महासचिव, सुमित अत्री को सचिव, मुकेश शर्मा को कोषाध्यक्ष चुना। इसके अलावा ईश्वर गौतम, प्रताप पांडे, चंद प्रकाश वत्स, अशोक चिकित्सा, राजकुमार दत्तौड और दीपक राज को सदस्य चुना गया। नई कार्यकारिणी के सदस्यों ने पंडित लक्ष्मीचंद की मूर्ति पर माल्यार्पण किया। समिति संरक्षक पालेराम शर्मा, निवर्तमान प्रधान प्रवीण शर्मा और सतीश शर्मा ने नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई दी।